ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)77

©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

राज शुक्ल 'ग़ज़लराज'
दुर्गा नगर आशुतोष दिव्य ज्योति मार्केट के सामने वाली गली,
बरेली, उत्तर प्रदेश,243006

Corresponding Author :
राज शुक्ल 'ग़ज़लराज'
दुर्गा नगर आशुतोष दिव्य ज्योति मार्केट के सामने वाली गली,
बरेली, उत्तर प्रदेश, 243006

गज़ल

हमारी महफ़िल से चल दिये पर क्या इश्क़ भी कर फ़ना सकोगे
मिलोगे हमसे कभी कहीं तो क्या हमसे नज़रें मिला सकोगे ॥

वफ़ाये मेरी तुम्हारी राहें कभी कहीं पे तो रोक लेंगी
कसम से हमदम ये मान लो तब घुमा के चेहरा न जा सकोगे ॥

तेरे तसब्बुर में जान हमने बिता दिया है हरेक पल ही
मुझे ज़फाग र जहां को जानम बताओ कैसे बता सकोगे ॥

ये मान भी लूँ कि लोग सारे तुम्हारी बतों को मान लेंगे
प तुम सही हो ये ख़ुद ही ख़ुद को कभी यकीं क्या दिला सकोगे ॥

मेरी मुहब्बत को छोड़ कर के जहाँ भी जाओगे जाने जाना
मेरी तरह ही जलोगे हर पल न चैन इक पल भी पा सकोगे ॥

तुम्हारे सदके है जान मेरी निसार तुमपे हमारी खुशियाँ
हमारे जैसा कभी कहीं से न दूसरा कोई ला सकोगे ॥

अभी समझ राज लो मुहब्बत अभी है मौका वगरना जानम
चला गया जो जहान से मैं नहीं कभी फिर बुला सकोगे ॥

•